

DABHOI LINES

RAILWAYS OF YORE



Beginning of Narrow Gauge

A.K. Srivastava

● पुस्तक की विधा :- इतिहास ● पृष्ठ संख्या :- 318

● लेखक :- श्री ए. के. श्रीवास्तव

● मूल्य :- हार्डबाउंड-950 रु., पेपर बैक-400 रु.

● प्रकाशक :- जेनेसिस पब्लिशिंग, इलाहाबाद

डभोई-मियांगाम खंड में भारत में नैरोगेज की शुरुआत हुई थी एवं यह लाइन 150 वर्षों पश्चात भी चल रही है। आज जब सम्पूर्ण विश्व में नैरोगेज लाइन पुरानी यादों की विषय वस्तु एवं बीते कल की बात बन गई है, वहीं यह लाइन प्रतिदिन पाँच ट्रेनों एवं सात डिब्बों के साथ यात्रियों को अपने मंजिल तक पहुँचाकर सेवा प्रदान कर रही है, जो यह महाराजा खांडेराव गायकवाड़ के समय भी करती थी। यह लाइन अपने आप में विशिष्ट है। जब इस लाइन की संकल्पना की गई थी, तब उस समय भारत

‘डभोई लाइन्स’-रेल के इतिहास का रोचक दस्तावेज़

में ही नहीं, बल्कि इसके नजदीकी अन्य देशों में भी कहीं नैरोगेज लाइनें नहीं थीं। यहाँ ब्रॉड गेज लाइन बनाने का लगातार दबाव था, क्योंकि लॉर्ड डलहौजी ने अपने स्वर्णिम काल में इसका आदेश दिया था। भारत में रेलवे की शुरुआत इसके कुछ ही वर्ष पूर्व हुई थी एवं इसका मुख्य उद्देश्य इंग्लैंड से सेना एवं माल परिवहन द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य को और अधिक सशक्त बनाना था। यद्यपि डभोई लाइन एक भारतीय द्वारा प्रथम पहल का परिणाम था एवं इस तकनीक को अपनाकर स्थानीय लोगों की जरूरतों को सरल बनाया गया। यह कच्ची सड़कों का एक अच्छा विकल्प प्रदान करती थी, जो वर्षा ऋतु में अनुपयोगी बन जाया करती थीं। इस रेल लाइन ने क्षेत्र को एक सस्ता और तीव्र गति का यातायात साधन उपलब्ध कराया, जहाँ साधारणतः रेलवे शायद ही अपनी सेवा प्रदान करती। यह एक लाइन से कहीं बढ़कर थी। यह भारत की महत्वाकांक्षा की सूचक थी एवं तीव्र विकास की जरूरत थी। **‘डभोई लाइन्स’** नामक पुस्तक इस लाइन एवं इसके इतिहास के अन्य पहलुओं का भी प्रमाण देती है, जो इस लाइन के निर्माण एवं इसके विकास की पृष्ठभूमि बनाती है। इस विकास के साथ ही बड़ौदा एक अच्छी स्थिति में जा पहुँचा, जहाँ रेल घनत्व एवं उद्योगों की संख्या राष्ट्र के अन्य स्थानों से कहीं अधिक थी। यह पुस्तक रेलवे के इतिहास के बारे में है। परन्तु यह रेलवे के इतिहास को बयां करने वाली पुस्तकों से काफी अलग

है। यह पुस्तक आर्थिक इतिहास को दर्शाती है एवं एक सूक्ष्म इतिहास प्रस्तुत करते हुए 19 वीं सदी के अंत एवं 20 वीं सदी की शुरुआत के दौरान वडोदरा को एक छोटी दुनिया मानते हुए इसके बृहद परिवर्तन को समझने का एक अच्छा प्रयास है। इस काल के दौरान होने वाली वैश्विक परिघटनाओं जैसे अमेरिकी नागरिक युद्ध, स्वेज़ नहर का निर्माण, विश्व युद्ध आदि के बड़ौदा की अर्थव्यवस्था एवं रेलवे पर हुए प्रभाव को भी निकट से दर्शाती है। **‘डभोई लाइन्स’** बड़ौदा राज्य के गायकवाड़ों के इतिहास का वर्णन भी करती है। साथ ही नैरोगेज के क्रमिक विकास के साथ-साथ विकसित बड़ौदा राज्य एवं नैरोगेज लाइन की आत्मनिर्भरता का रोचक विवरण भी देती है। एक ज़माने में जब हिसाब की किताबें लाभ नहीं दिखा रही थीं, तो गायकवाड़ों ने सीधे ही प्रशासन अपने हाथों में ले लिया और उसके बाद से इस रेलवे लाइन ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। पुस्तक के लेखक श्री ए. के. श्रीवास्तव भारतीय रेल यातायात सेवा के एक वरिष्ठ अधिकारी हैं, जो पूर्व में वडोदरा के मंडल रेल प्रबंधक के पद को भी सुशोभित कर चुके हैं। वर्तमान में पश्चिम रेलवे के मुख्य दावा अधिकारी के पद पर कार्यरत श्री ए. के. श्रीवास्तव अनेक ऐतिहासिक तथ्यों को सुरुचिपूर्ण ढंग से पेश करने वाली इस आकर्षक पुस्तक के सृजन के लिए हार्दिक अभिनंदन के पात्र हैं।

अभिव्यक्ति के आसमान पर उन्मुक्त उड़ान

कविता इंसान के जज्बात की तर्जुमानी होने के साथ-साथ आम आदमी के सपनों, संघर्षों, उम्मीदों और आकांक्षाओं का जीवंत दस्तावेज़ होती है। हर दौर में कवि अपने ज़माने की सच्चाइयों, समस्याओं और परिदृश्य को अपने अनुभवों की रोशनी में देखता है और लफ़्ज़ों के पैकर में ढालकर पेश करता है। पश्चिम रेलवे के उप मुख्य परिचालन प्रबंधक (योजना) एवं इस पुस्तक के रचयिता कवि श्री संतोष कुमार झा इसी राह के हमराही हैं। उन्होंने एक तरफ़ वक्त की चाल के साथ कदम मिलाते हुए रोज़मर्रा की जद्दो-जहद को आईना दिखाया है, तो दूसरी तरफ़ दिल की धड़कनों को एहसास के फूलों से सजाया है। कविता के इस गुलशन में फूलों के साथ काँटे भी हैं, मुहब्बत की महक है, तो जुदाई की कसक भी है। खुशनुमा यादें हैं, तो अशकों की बरसातें भी हैं। चंद नमूने देखिये-

जिंदगी ने क्यों दिखाये, ये अजब मंज़र हमें
लाया कैसा आईना, जिसमें मेरा चेहरा न था।

उन लकीरों से भी मेरी किस्मत न बदली

जिन्हें मैंने खुद अपने हाथों से खींचा।

सोचा नहीं ये ज़ख्म क्यों, भर न पाये आज तक

आपकी उम्मीद में हम, मर न पाये आज तक।

अशकों की बूंदें रूमानी, ढलकीं उनके गालों पर

हम ये समझे ओस गिरी है, ताज़ा लाल गुलाबों पर।

कवि जब मज़हब में बैठे हुए इंसान की बात करते हैं, या महात्मा गांधी के सिद्धांत की बात करते हैं, तो भावनाओं पर नियंत्रण रखते हुए अपनी तार्किकता से कविता को एक संतुलित मुकाम तक पहुँचाते हैं। उनके भीतर संवेदना का ज्वार है। साथ ही फ़न और हुनर का संयम भी है। कवि अपनी सोच और सरोकार से वाक़िफ़ है। उन्होंने अपने आसपास की दुनिया की हलचल और अपने भीतर की उथल-पुथल को असरदार ढंग से पेश करने की ईमानदार कोशिश की है। खुद को कवि या शायर कहने में भी उन्हें संकोच है, क्योंकि उन्होंने काव्य अनुशासन की सीमाओं से बाहर निकलकर अभिव्यक्ति के आसमान पर उन्मुक्त उड़ान भरी है।

साहित्य के मैदान पर खड़े होकर सृजन की पतंग को आसमान की बुलंदियों पर ले जाना बहुत बड़े हुनर का काम है। यह हुनर आते-आते ही आता है। शख्सियत को असरदार बनाने के लिए लिबास और लहजे की भी अहमियत होती है। नदी के सहज प्रवाह के लिए तटों का बंधन भी जरूरी है। अगर सरिता के पास दो किनारों का संतुलन न हो तो उसके जल में कल-कल का मधुर संगीत नहीं सुनाई देगा। कवि को अपनी सीमाओं की जानकारी है। हमें पूरी उम्मीद है कि आने वाले वक्त में वे काव्य



संतोष कुमार झा



● पुस्तक की विधा :- काव्य संग्रह

● लेखक :- श्री संतोष कुमार झा

● मूल्य :- 400 रु. ● पृष्ठ संख्या :- 86

● प्रकाशक :- श्रुति प्रकाशन, दिल्ली

अनुशासन की डोर में बंधकर उन्मुक्त उड़ान भरते हुए आसमान की बुलंदियों का सफ़र तय करेंगे।

✍ देवमणि पांडेय, प्रसिद्ध साहित्यकार, आयरकर भवन, मुंबई